REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 7 | APRIL - 2022

आम आदमी पार्टी का उद्भव

ईश्वर लाल कटारा
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,उदयपुर.

प्रस्तावना

आज से 10 पूर्व जब यह अरविन्द केजरीवाल का कारवा परिवर्तन नाम से शुरू हुआ। तब यह किसी ने नहीं सोचा होगा की यह एक दिन पार्टी बनाएगे तथा चुनावी राजनीति में आयेगे तथा चुनावी राजनीति में आकर इतना प्रभावी असर पडेगा, जो इन्होंने बाद में जाकर ''आम आदमी पार्टी का गठन किया।

आज पूरे देश में अरविन्द केजरीवाल जी का करिश्मा और आम आदमी पार्टी की चर्चा है लेकिन हमें अतीत में जाना होगा की यह आम आदमी पार्टी दिल्ली के बाद पंजाब में भी सफल होकर पंजाब में अपनी सरकार बनाने में कामयाब हुई। और यह आने वाले अन्य राज्यों के विधान सभा चुनाव व लोकसभा चुनाव में भी सफल होगी।

भूमिका

आम आदमी पाटी के संस्थापक व राष्ट्रीय संयोजक अरविन्द केजरीवाल है। यह दिलली में लगातार दुसरी बार सरकार बनाने के बाद पंजाब में भी सरकार बनाने में सफल हुए।

अरविन्द केजरीवाल ने उनके नेतृत्व में सामाजिक आन्दोलन के लिए परिवर्तन नामक मोर्चा के माध्यम से एक परिवर्तन के लिए क्रान्ति की शुरूआत की। उन्होंने विशेषकर भ्रष्ट्राचार व जनलोकपाल बिल को लेकर एक सामाजिक आन्दोलन का नेतृत्व किया।

आम आदमी पार्टी का उद्भव

आज से 12 वर्ष पूर्व जब 'परिवर्तन' नाम से एक आन्दोलन चलाया गया। जिसमें परिवर्तन अर्थात बदलाव लाना था। बाद में परिवर्तन नामक संस्था जिसके माध्यम से उन्होंने जमीनी स्तर पर बदलाव लाने के लिए संघर्ष किया।

16 अगस्त 1968 में हरियाणा मे जन्मे अरविन्द केजरीवाल शुरू से ही पढाकु प्रवृति के थे। उन्होंने IIT खडगपुर में मेकेनिकल की डिग्री प्राप्त की। तथा 1889 में झारखण्ड के टाटा नगर में टाटा टिस्को कम्पनी में नौकरी की।

उन्होंने नौकरी के साथ ही सिविल सर्विस की तैयारी करते रहे। उन्होंने दो बार सिविल सर्विस की परिक्षा पर IAS बनने में असफल रहे। फिर 1992 में उन्होंने IRS को चुन लिया तथा पहली बार 1995 में इनकम टैक्स में असिस्टेन्ट अधिकारी बनकर दिल्ली आ गए।

आगे चलकर उन्होंने IRS की नौकरी छोड दी तथा उन्होंने ''पब्लिक कौर रिसर्च फाउण्डेशन नामक NGO का गठन किया। इसी दौरान उनकों मनीष सिसोदिया जी मिले।

अरविन्द केजरीवाल ने मनीष सिसोदिया के साथ मिलकर परिवर्तन नाम से आन्दोल चलाया। परिवर्तन अर्थात बदलाव लाना था। ''परिवर्तन'' संस्था के माध्यम से उन्होंने जमीनी स्तर पर बदलाव लाने के लिए संघर्ष किया।

2005 में अरविन्द केजरीवाल और मनीष सिसोदिया ने मिलकर एक कबीर नामक रजिस्टर्ड NGO बनाया। इसी बीच दिल्ली सरकार ने RTI को लागु कर दिया। जिसे सरकारी दफ्तरों से लोगों को सुचना मिलना आसान हो गया। और इन दोनों ने मिलकर लोगों की सहायता करना शुरू कर दिया।

2005 में जब UPA सरकार ने राष्ट्रीय स्तर पर RTI को लागु कर दिया। इसके बाद अरूणा राय और अन्ना हजारे के साथ मिलकर केजरिवाल की RTI के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली।

अरविन्द केजरीवाल को लगा की RTI जनता के लिए एक क्रान्तिकारी बदलाव लेकर आयी है लेकिन इसे सुचना जुटाने के अलावा और कुछ नहीं किया जा सकता है। अर्थात दोषियों को दण्डित नहीं किया जा सकता है। तथा इसके खिलाफ उन्होंने पूनः एक नये जनआन्दोलन की शुरूआत की।

2009 के लोकसभा चुनाव जीतकर मनमोहन सिंह जब दुसरी बार P.M. की शपथ ले चुके थे। और दो साल का वक्त हो गया था। जिसने कामनवेल्थ और 2 जी घोटाला के बाद हिन्दुस्तान की रियासत अलग ही दिशा ले रही थी। इसी बीच जन आन्दोलन को लेकर अन्ना हजारे सियासी परिधि पर आ चूके थे और उनके साथ अरविन्द केजरीवाल थे।

अन्ना हजारे ने अन्न, जल त्याग दिया था। रामलीला मैदान में हजारों की भीड उमडने लगी थी। और देश आन्दोलनरत हो गया। जन लोकपाल बिल की मांग को लेकर इण्डिया अगेन्स करपशन्स के बेनर तले अन्ना हजारे का आन्दोलन UPA सरकार पर दिखने लगा।

किरण बेदी कुमार विश्वास, योगेन्द्र यादव, मनीष सिसोदिया जैसे लोग अन्ना हजारे और केजरीवाल के साथ थे। साथ में बाबा रामदेव भी कालेधन को लेकर रामलीला मैदान में धरने पर बैठे थे। भष्ट्राचार को लेकर जनता ऊँची आवाज में UPA सरकार के खिलाफ और बोलने लगी।

मनमोहन सरकार ने राष्ट्रीय सलाहकार परिषद से जनलोकपाल बिल का ड्राफ तैयार किया। लेकिन केजरीवाल और अन्य दुसरे सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने इस बिल को खारिज कर दिया। जनवरी 2012 में आते–आते केन्द्र सरकार अपने वादे से पलट गई।

जिसके खिलाफ केजरिवाल और उनके साथी एक बार फिर से एक मजबुत जनलोकपाल बिल को लेकर फिर सडकों पर आ गए। लेकिन 2012 की गर्मिया आते–आते केजरिवाल ने अन्ना हजारे से अलग हो गये तथा और वे खुद आन्दोलन का चेहरा बनने लगे।

आम आदमी पार्टी का गठन

आन्दोलन से अलग होने के बाद उन्होंने 2 अक्टूम्बर, 2012 को एक राजनीतिक पार्टी का गठन किया जो 24 नवम्बर, 2012 के इसे ''आम आदमी पार्टी' का नाम रखा गया।

नवम्बर 2012 में अरविन्द केजरिवाल ने आम आदमी पार्टी का गठन किया और व स्वयं पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक बने और उसकी कमान सम्भाली। तथा आम आदमी पार्टी से नाराज होकर अन्ना हजारे अलग हो गए।

2013 में दिल्ली विधानसभा में पहली बार आप का प्रदर्शन

2013 में दिल्ली विधानसभा चुनाव होने वाला था। और अरविन्द केजरिवाल अपनी आम आदमी पार्टी को लेकर चुनावी मैदान में उतर पडे थे। और अन्ना का साथ टुट चुका था।

2013 में दिल्ली में पहली बार आम आदमी पार्टी का प्रदर्शन। सिर्फ एक साल पुरानी पार्टी ने दिल्ली में कमाल कर दिया। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शिला दीक्षित को केजरिवाल के खिलाफ नई दिल्ली सीट से चुनावी द्वार का सामना करना पडा।

आम आदमी पार्टी 28 सिटो के साथ सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी।

आप	=	28
BJP	=	31
कांग्रेस	=	11

आप पार्टी ने कांग्रेस की मदद से सरकार बनायी। 28 दिसम्बर, 2013 से 14 फरवरी, 2014 तक अरविन्द केजरीवाल ने दिल्ली के सातवें मुख्यमंत्री के रूप में 49 दिन तक कांग्रेस के समर्थन से सरकार चलाई और 14 फरवरी 2014 को इस्तीफा दे दिया।

साल 2014 में लोकसभाचुनाव था मोदी बनारस से चुनाव लड रहे थे और अरविन्द केजरीवाल मोदी के खिलफ चुनाव लड वाराणसी पहुँचे लेकिन अरविन्द केजरीवाल मोदी के खिलाफ करारी हार का सामना करना पडा। अरविन्द केजरीवाल हारकर दिल्ली लौटे और 2015 के विधानसभा चुनाव की तैयारिया की।

योगेन्द्र यादव प्रोफेसर आनन्द कुमार, प्रशासन्त भूषण कुमार विश्वास, आशुतोष जैसे लोग केजरीवाल के साथी थे। और इस बार भी कहा नहीं जा सकता था कि जनता दूबारा केजरीवाल पर भरोसा करेगी या नहीं। लेकिन 70 सीट में से 67 सीट पर आम आदमी पार्टी ने जीत दर्जकर दिल्ली की सत्ता में वापसी की।

BJP को सिर्फ तीन सिटे मिली और कांग्रेस का खाता भी नहीं खुला। केजरीवाल ने जनता से किये अपने वादे पुरे किये पानी और सस्ती बिजली का वादा पूरा हुआ लेकिन सत्ता में आने के बाद योगेन्द्र यादव व प्रशान्त भुषण जैसे साथियों केजरीवाल के मतभेद हो गए व उनसे अलग हो गए। लोगों ने केजरीवाल को अहकारी करार दिया व दुर्वव्यवहार का आरोप उनके उपर लगा।

2015–16 के दौरान उन्हें मोहल्ला क्लीनिक और अफसरों की नियुक्त को लेकर अरविन्द केजरीवाल और राज्यपाल नजीब जंग के साथ सास्थानिक अधिकारों को लेकर मतभेद लम्बा चला।

2018 दिल्ली के तत्काली मुख्य सचीव अंशु प्रकाश ने अरविन्द केजरीवाल पर आरोप लगाया की। मुख्यमंत्री आवास पर आप पार्टी के विधायकों ने उनके साथ मार पीट की।

वर्ष 2019 में लोकसभा चुनाव हुए व आप पार्टी दिल्ली की 7 सीटों पर करारी हार का सामना करना पड़ा।

दिल्ली के 2021 के विधानसभा चुनाव की तैयारी शुरू कर दी केजरिवाल ने 200 यूनिट फ्री बिजली के साथ प्रतिमाह 20 हजार लीटर मुफ्त पानी देकर दिल्ली में अपनी स्थिति मजबुत करने की कोशिश की।

दिल्ली विधान सभा चुनाव में केजरीवाल ने 62 सीट दर्ज की और कांग्रेस और बीजेपी को धराशायी कर दिया है BJP सिर्फ 8 सीटे जीती। और कांग्रेस का एक सीट पर भी खाता नहीं खुला।

पंजाब में आप की सरकार

दिल्ली की तरह आम आदमी पार्टी ने पंजाब में भी बडी जीत हासिल की है पंजाब की 117 सदस्यों की विधानसभा में 92 सीटे जीतकर आम आदमी पार्टी ने तीन–चौथाई से ज्यादा बड़ा बहूमत हासिल किया है।

पंजाब के प्रभारी और दिल्ली के विधायक राघव चड़ा ने कहा कि यह केजरीवाल मॉडल ऑफ गवर्नेस की जीत है। उन्होंने कहा कि यह मॉडल अब पुरे देश चलेगा।

पंजाब में मिली भारी जीत के बाद आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविद केजरीवाल ने कहा कि आपने देखा कि पंजाब में कितने बड़े षड़यत्र किये गए आखिर में ये सारे इकट्ठे होकर बोले की केजरीवाल आतंकवादी है। इन नतीजों के जरिये देश की जनता ने बता दिया केजरीवाल आतकवादी नहीं देश का सच्चा सपूत है।

पंजाब में केजरीवाल मॉडल ऑफ गवर्नेस

पंजाब में आम आदमी पार्टी की भारी भरकम जीत के बाद पार्टी नेताओं ने यह कहना शुरू कर दिया कि केजरीवाल मॉडल ऑफ गवर्नेस को जनता ने चुना है और पूरे देश में यह शासन का पहुँच गया है।

आज आदमी पार्टी इस साल के अंत में होने वाले दो राज्यों–गुजरात और हिमाचल प्रदेश के विधानसभा चुनाव में फिर से चुनावी मुद्दा रहेगा। बच्चों की पढाई, महिलाओं की कमाई, गरीब को राशन और सबकी सेहत का ख्याल यह इस मॉडल की खुबी बताई जा रही है।

पंजाब में आम आदमी पार्टी ने 300 यूनिट बिजली हर परिवार हर महीने मुफ्त देने का वादा किया है।

2017 में पंजाब में आप का प्रदर्शन

आप	=	20 सीटे
कांग्रेस	=	77 सीटे
शिअद	=	15 सीटे
भाजपा	=	3 सीटे
अन्य	=	1 सीटे

2017 में आप पंजाब में दुसरी सबसे बडी पार्टी बनकर तथा यह चंडीगढ और सुरत नगर निगम में भी बडी जीत हासिल कर चुकी है।

2022 में पंजाब विधानसभा चुनाव में आप का जनादेश

आप	=	92 सीटे 42 %
कांग्रेस	=	18 सीटे
भाजपा	=	2 सीटे
शिअद	=	3 सीटे
अन्य	=	2 सीटे

2022 के विधानसभा चुनाव के गोवा में आप का प्रदर्शन

इस बार आम आदमी पार्टी गोवा में भी अपना प्रदर्शन व प्रभाव दिखाने में सफल रही। आप गोवा में 2 सीटे जीतकर विजयी रथ की शुरूआत की है।

आम आदमी पार्टी की राष्ट्रीय राजनीति में बढती भूमिका

दिल्ली और पंजाब महाजीत के साथ सत्ता हासिल करके गोवा में पहली बार–बार सीटों जीत के साथ अपना खाता खोलकर आम आदमी पार्टी ने विपक्षी राजनीति के राष्ट्रीय फलक पर अपनी जगह बनाने की दिशा में गंभीर कदम बहा दिये है।

पार्टी गठन के नौ साल के भीतर दिल्ली की सीमा पार करते हुए पंजाब में लगभग तीन चौथाई बहुमत हासिल कर आप मौजूदा भाजपा और कांग्रेस के बाद कम से कम दो राज्यों में अपनी सरकार बनाने वाली तीसरी पार्टी बन गई है।

आप के इस कामयाबी के दम पर कांग्रेस के लिए एक गम्भीर चुनौती पेश कर दी है इतना ही नहीं, विपक्षी सियासत को आगे बढाने की होड में शामिल कई क्षैत्रीय दलों के क्षमपो के लिए अब आप के संयोजक अरविन्द केजरिवाल की अनदेखी संभव नहीं होगी।

दरअसल बीते तीन दशक के दौरान देश की राजनीति में भाजपा, कांग्रेस और अन्य दलों के अलावा कोई भी अन्य पार्टी दो प्रदेश में सरकार नहीं बना सकी। विपक्षी खेमे की सियासत में सक्रिय रही राजद, द्रुमुक व शिवसेना हो या फिर राष्ट्रवादी कांग्रेस, इनमें से कोई भी एक से अधिक राज्य में सत्ता हासिल नहीं कर पाई है।

राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा पाने से एक कदम दुर

गुजरात व हिमाचल के चुनाव में होगी राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा प्राप्त करने की कोशिश भारतीय निर्वाचन आयोग में चुनावी मानदण्डों के आधार पर किसी भी पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी बनने का दर्जा प्राप्त करने के लिए चार राज्यों में छह प्रतिशत से अधिक मत हासिल करना जरूरी होता है।

राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा हासिल करने के लिए अब आप को दिल्ली, पंजाब और गोवा के बाद केवल एक राज्य में छह प्रतिशत वोट हासिल करने की जरूरत है। इस बार पार्टी गुजरात व हिमाचल प्रदेश में इसी साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव में इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए कम कसली नजर आ रही है।

आप का राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति का संकेत

अब पूरे देश में होगा इंकलाब ''केजरीवाल'' पंजाब में ऐतिहासिक जीत पर आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक एवं दिल्ली के अरविन्द केजरिवाल ने पार्टी मुख्यालय पर पंजाब जीत के जश्न के शामिल हुए और कहा पंजाब जीत के जश्न में शामिल हुए और कहा पंजाब के लोगों ने कमाल कर दिया ''आई लव यू पंजाब इन्होंने सरघट भगवत मान को पंजाब का Cm बनने की बधाई देते हुए कहा कि ''पहले दिल्ली में इकलाब हुआ आज पंजाब में इकलाब हुआ।

''इससे अदेशा लगा सकते है कि उन्होंने एक तरह से राष्ट्रीय राजनीति करने के भी संकेत दे दिए ।

केजरीवाल ने कहा कि पिछले 75 साल से अग्रेजों वाला सिस्टम चल रहा था। आम आदमी पार्टी ने पिछले सात साल से यह सिस्टम बदला है। गरीबों के बच्चों की अच्छी शिक्षा मिलने लगी है और बाबा साहब अंबेडकर और भगतिसिह का सपना पूरा होने लगा है आज हम लोगों को सकल्प लेना है कि हम नया भारत बनाएगे उन्होंने कहा कि सारी महिलाएँ यूथ किसान, श्रमिक व्यापारी और उद्योगपति सभी लोग आम आदमी पार्टी में शामिल हो।

निष्कर्ष

इस प्रकार आम आदमी पार्टी (आप) दिल्ली व पंजाब और गोवा में मिली 2 सीटों पर सफलता के बाद अब यह अदेशा लगाया जा सकता है कि आने वाले राज्यों के विधानसभा चुनाव व लोकसभा चुनावों में विपक्षी राजनीति के तौर पर राष्ट्रीय राजनीति में अपनी जगह बनाने में कामयाब हो सकती है।

अर्थात् एक मजबुत विकल्प तौर पर BJP व कांगेस के बाद तीसरे मोर्चे के रूप में उभर सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- राजस्थान पत्रिका
- दैनिक जागरण यूटूब
- दैनिक भास्कर
- नया इण्डिया
- आज तक You tube
- दैनिक जागरण
- आम आदमी पार्टी
- जनसत्ता
- www.youtube.com
- www.ndtv.in
- www.zeenews.india.com
- https:/ndtv. in >topic>anvind-kejriwal.